दोहों में जीवन की सच्चाई झांकती है

ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

हर व्यक्ति का कोई- न -कोई उद्देश्य है इस जीवन में आने का । व्यक्ति वो कभी हासिल नहीं कर पाता, जो उसे चाहिए होता है पर ईश्वर व्यक्ति को इतना अवश्य दिए रखता है, जितना उसके लिए आवश्यक है । कितने ही लोग ऐसे हैं, जो बहुत सामान्य थे पर ईश्वर की कृपा ऐसी रही कि रातों रात बहुत बड़ा आसमां छू लिया । कितने लोग ऐसे हैं, जिनके पास बहुत पैसे हैं, सारी सुविधाएं हैं पर उस मुकाम तक नहीं पहुंच पाते, जहां तक उनसे उम्मीद की जाती है । लेखन क्षेत्र भी बिल्कुल वैसा ही है । मैं जीवन में बहुत से ऐसे लोगों को जान सका हूँ , जिनके पास कागज, कलम के पैसे नहीं थे , उन्होंने पत्तियों के रस से, राख में मिले कोयले से दीवारों और अन्य किसी रिक्त जगह पर लिखकर अपना मुकाम हासिल किया है । कबीर के पास गायन कला न होती तो उनके बहुत से दोहे, ग़ज़ल और अन्य कवित हमारे बीच नहीं आ पाते । वो महज गाते थे , जनता ने उनके कवित को लिख-लिखकर अमर किया है ।

तुलसी हो, कबीर हो,रहीम हो, रसखान हो या सूरदास सभी के दोहों का आकार बहुत फैला हुआ है और उनमें अथाह गहराई है । ये जीवन के गहरे रहस्य को तो छूते ही हैं , ईश्वर के अस्तित्व को भी पूरी सत्यता के साथ प्रकट करते थे । इन सबको भाषा और साहित्य का उतना ज्ञान नहीं था -

'रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो छिटकाय'. छिटकाय शब्द महज तुकबंदी और मात्रा मिलान के लिए रखा गया है । इनके समय खड़ी बोली हिन्दी के पास कोई मानक नहीं था, यह अवश्य था कि सब समझ जाते थे। कोई नहीं भी समझ पाता था तो साथ वाला ही उनका मास्टर बन जाया करता था कि ऐसे नहीं ऐसे है । कबीर एक फकीर होकर भी इसीलिए संत कहलाए । उनके अनेक दोहे हैं, जिसमें आय, जाय, खाय, पाय शब्द प्रयोग हुए हैं , वो भी महज तुकबंदी और मात्रा मिलान के लिए रखे गए थे । परन्तु हर शब्द अपना अर्थ प्रकट करता है , ध्वनि प्रकट करता है । दोहे चूंकि आरंभिक काल से एक ही तरह के छंद , एक ही तरह की मात्रा में कहे जाते रहे हैं , कबीर ने तो अपनी ग़ज़ल (हमन है इश्क़ मस्ताना) लगभग दोहे वाली मात्रा में ही लिखीं । दरअसल इन सभी के दोहों में "जीवन" इतनी मार्मिकता के साथ बोलता है कि सवाल खड़े होने की गुंजाइश बचती ही नहीं । मलूकदास के एक दोहे में सच्चाई जब विहंगम होकर तीनों नेत्रों से झांकती है तो जाति, धर्म, भाषा, वर्ग, संस्कृति और अमीरी-गरीबी के सारे भेद ऑधे मुंह आकर गिरते हैं -

'दया, धर्म हिरदे बसे, बोले अमृत बैन ।

तेई ऊंचे जानिए, जिनके नीचे नैन ।।

साहित्य में अगर पूरी मानवीयता का पक्ष पाक साफ होकर उठाया जाता है फिर अपवाद की गुंजाइश नहीं रह जाती । कबीर ने सभी धर्मों की खूब धज्जियां उड़ाई हैं पर आलोचकों ने उस सबको स्वीकारा है। किसी में आज तक तर्क सहित व्याख्या करने की हिम्मत नहीं हुई कि खुदा बहरा है या नहीं , कोई ये भी साबित नहीं कर पाया कि पत्थर की बनाई ईश्वर की मूर्ति बड़ी है या आटा पीसकर रोटी खिलाने वाली चाकी ? अगर ईश्वर खुद प्रकट भी हो जाए तो यही कहेगा कि मैं नहीं चाकी ही बड़ी है । गुरू और गोविंद में से गुरू को बड़ा बताने पर भी किसी को आज तक आपत्ति नहीं है । साहित्य में अगर जीवन की सच्चाई इस तरह झांकती हुई मिले तो न्याय स्वत: उभरकर आ जाता है। पक्ष, विपक्ष के समक्ष विवाद की गुंजाइश ही नहीं रह जाती । आज अगर दोहे एक ही मात्रा और विधान में निभ रहे हैं तो उसका कारण उसके मूल रचनाकारों की चेतना शक्ति, कवित्व और परिस्थिति के विरुद्ध सत्य का मशालीय आह्वान है।

-रामअवतार बैरवा